एक धरलिया भाव

एकनाथ महाराज द्वारा लिखित अभंग

ध्रुवपद

एक धरलिया भाव।
आपणचि होय देव॥

मनुष्य को एक ही भाव रखना चाहिए—
कि भगवान हमारे अपने हैं।

पद १

नको आणिक सायास।
जाय जिकडे देव भास॥

मनुष्य को कोई प्रयास करने की ज़रूरत नहीं है;
वह जहाँ भी जाएगा, उसे भगवान के सान्निध्य की अनुभूति होगी।

पद २

ध्यानी मनी शयनी।
देव पाहे जनी वनी॥

उसे भगवान के दर्शन हर जगह हो सकते हैं —
ध्यान में, मन में, निद्रा में, लोगों में और पेड़-पौधों में।

पद ३

अवलोकी जिकडे।
एका जनार्दनी देव तिकडे॥

जनार्दन के एकनाथ कहते हैं,
"मैं जहाँ भी देखता हूँ, मुझे भगवान के दर्शन होते हैं।"

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस अभंग की ऑडिओ रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में *Songs of Ecstasy* के नाम से उपलब्ध है।